अध्याय 2

जनसांख्यिकीय संरचना एवं भारतीय समाज, ग्रामीण-नगरीय संलग्नता और विभाजन

अध्ययन बिन्दु–

- जन सांख्यिकी के सन्दर्भ में प्रचलित सिद्धान्त
- जनांकिकी से सम्बन्धित अवधारणाएँ
- भारत की जनसंख्या संरचना
- ग्रामीण नगरीय विभाजन
- ग्रामीण नगरीय संलग्नता

प्रस्तुत अध्याय में भारतीय समाज की जनांकिकीय संरचना का विश्लेषण करते हुए ग्राम नगर विभाजन तथा दोनों में संलग्नता की विवेचना की गई है।

इस अध्याय के माध्यम से विद्यार्थी समझ पाएँगे कि

- जनांकिकी क्या है?
- भारतीय समाज की जनसांख्यिकीय संरचना किस प्रकार की है?
- जनांकिकी से सम्बन्धित विभिन्न अवधारणाओं का आशय क्या है?
- ग्रामीण-नगरीय संलग्नता किस प्रकार है?
- भारतीय समाज में ग्राम-नगर विभाजन का स्वरूप क्या है?

इस अध्याय के माध्यम से हम भारतीय समाज के जनांकिकीय स्वरूप को समझते हुए गाँवों तथा शहरों के मध्य के आपसी आदान-प्रदान तथा अन्तरों को स्पष्ट करने में सक्षम होंगे।

''आज समाज-विज्ञानों में जनसंख्या का अध्ययन करना इसलिए महत्वपूर्ण होता जा रहा है कि जनसंख्या का सम्बन्ध केवल इसके घनत्व, जन्म-दर, मृत्यु-दर अथवा आयु और लिंग के अनुपात से ही नहीं है वरन् इसका सामाजिक व्यवस्था से भी घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। हम जनसंख्या को जिन विशेषताओं के आधार पर परिभाषित करते हैं, उनका निर्धारण प्रमुखत: सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक संगठन की प्रकृति के अनुसार होता है।''

–किंग्सले डेविस

किसी देश की जनसंख्या का अध्ययन इसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था, संरचना तथा प्रक्रिया को समझने, प्राकृतिक दशाओं को जानने एवं भूत, वर्तमान तथा भावी तस्वीर स्ष्ट करने के लिए अपरिहार्य है। देश में परिवर्तन की दशा एवं दिशा का अनुमान जनांकिकीय संरचना के माध्यम से आसानी से लगाया जा सकता है। जनसांख्यिकीय आँकड़े, राज्य की नीतियों, विशेष कर आर्थिक विकास और सामान्य जन कल्याण सम्बन्धी नीतियाँ बनाने और क्रियान्वित करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

जनसंख्या का आकार, प्रकृति, वृद्धि दर तथा जैविकीय एवं क्षेत्रीय विशेषताओं के आधार पर भारत में काफी विविधताएँ दृष्टिगत होती हैं। भारतीय समाज को जानने-समझने के लिए इसकी जनांकिकीय विशेषताओं तथा अभी तक इसमें होने वाले बदलाव को जानना परमावश्यक है। भारत में सर्वप्रथम औपनिवेशिक (ब्रिटिश पराधीनता) काल में 1872 में जनगणना हुई थी। तब से लेकर अब तक कुल 8 जनगणना गुलामी के काल में तथा 7 जनगणना आजाद भारत में (आधुनिक 2011) हो चुकी है।

स्वतंत्र भारत में जनगणना अधिनियम 1948 के आधार पर जनगणना की जाती है। भारत की जनगणना को शांतिकाल में किए जाने वाला विश्व का सबसे बड़ा और जटिल प्रशासनिक कार्य मना जाता है।

जनसांख्यिकी के सन्दर्भ में प्रचलित सिद्धान्त

माल्थस का गुणोत्तर वृद्धि का सिद्धांत– ब्रिटिश इतिहासवेत्ता तथा राजनीतिक अर्थशास्त्री थॉमस रोबर्ट माल्थस (1766-1834) ने अपनी पुस्तक 'एन ऐस्से ऑन दी प्रिंसिपल ऑफ पापुलेशन' (1798) में जनसंख्या वृद्धि के गुणोत्तर सिद्धान्त को स्पष्ट किया। उनके अनुसार जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय अथवा गुणोत्तर रूप से (2, 4, 8, 16, 32, 64....) होती है जबकि कृषि उत्पादन में वृद्धि गणितीय अथवा समांतर रूप में (2, 4, 6, 8,10, 12...) होती है। इस प्रकार जनसंख्या में तीव्र वृद्धि तथा खाद्यान्नों में तुलनात्मक रूप से धीमी वृद्धि गरीबी का मूल कारण है। समृद्धि बढ़ाने के लिए माल्थस ने कृत्रिम उपाय (बड़ी उम्र में विवाह, ब्रह्मचर्य, सीमित संख्या में बच्चे पैदा करना, युद्ध) तथा प्राकृतिक निरोध (महामारी, बीमारी, घातक रोग, प्लेग, विनाशकारी अकाल) बताये हैं। माल्थस के अनुसार यदि कृत्रिम निरोधों के उपरान्त जनसंख्या नियंत्रित नहीं होती है, तब प्रकृति स्वयं नियंत्रण का कोई न कोई कारगर उपाय अवश्य करती है।

उदारवादी तथा मार्क्सवादी विद्वानों ने माल्थस के जनसंख्या वृद्धि

सम्बन्धी विचारों का खण्डन किया तथा गरीबी एवं भुखमरी जैसी समस्याओं के लिए संसाधनों के असमान वितरण को प्रमुख कारण बताया।

जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के अनुसार जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास से जुड़ी हुई है। इसमें जनसंख्या वृद्धि की तीन चरण बताए गए हैं

प्रथम, समाज में जनसंख्या वृद्धि कम होती है इसका कारण है समाज अल्पविकसित और तकनीकी दृष्टि से पिछड़ा होता है। ऐसे में जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों ही ऊँची होती है। इसलिए दोनों के बीच शुद्ध अन्तर न्यून होता है। जैसा कि चन्द्रगुप्त मौर्य से लेकर ब्रिटिश शासन के प्रारम्भिक वर्षों तक भारतीय उप महाद्वीप की जनसंख्या लगभग 12 करोड़ पर स्थिर बनी रही। द्वितीय, जब समाज पिछड़ी से उन्नत अवस्था की तरफ विकास करता है तब मृत्यु दर तकनीकी एवं चिकित्सीय सुविधाओं की उपलब्धता के कारण नीची आ जाती है जबकि जन्म दर ऊँची बनी रहती है। जैसा भारत में 1961 से वर्तमान तक है। तृतीय, इस स्थिति में ऐसा विकसित समाज है (अमेरिका, रूस, ब्रिटेन आदि) जिनमें जन्म दर और मृत्यु दर दोनों काफी कम हो जाती है और इनके बीच का अन्तर अत्यन्त न्यून रह जाता है।

दूसरा चरण 'जनसंख्या विस्फोट' का होता है जिससे भारतीय उप महाद्वीप गुजर रहा है।

जनांकिकी से सम्बन्धित सामान्य अवधारणाएँ

साक्षरता– सात वर्ष और उससे अधिक आयु का व्यक्ति किसी भाषा को समझ सकता हो और उसे लिख तथा पढ़ सकता हो उसे साक्षर माना जाता है।

$$\text{साक्षरता दर} = \frac{\text{साक्षरों की संख्या}}{7+\text{आयु वाली जनसंख्या}} \times 100$$

स्त्री पुरुष अनुपात (लिंगानुपात)– जनसंख्या में प्रति 1000 पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या स्त्री-पुरुष अनुपात (लिंगानुपात) कहलाती है।

$$\text{स्त्री पुरुष अनुपात} = \frac{\text{स्त्रियों की संख्या}}{\text{पुरुषों की संख्या}} \times 1000$$

जन्म दर– जनसंख्या में प्रति 1000 पर जीवित उत्पन्न हुए बच्चों की संख्या होती है।

$$\text{जन्म दर} = \frac{\text{जीवित जन्मे बच्चों की संख्या}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 1000$$

मृत्यु दर– उपर्युक्तानुसार ही अर्थात्

$$\text{मृत्यु दर} = \frac{\text{कुल मृत्यु}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 1000$$

शिशु मृत्यु दर– यह उन बच्चों की मृत्यु की संख्या दर्शाती है जो जीवित पैदा हुए 1000 बच्चों में से एक वर्ष की आयु प्राप्त होने से पहले ही मौत के मुंह में चले जाते हैं।

मातृ-मृत्यु दर– उन स्त्रियों की संख्या की सूचक है जो जीवित प्रसूति के 1000 मामलों में अपने बच्चे को जन्म देते समय मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

शिशु एवं मातृ-मृत्यु दर का ऊँचा होना पिछड़ेपन एवं गरीबी का सूचक होता है। जब समाज विकास की ओर अग्रसर होता है तब ये दोनों दर घटने लग जाती हैं इसका कारण है चिकित्सकीय सुविधाओं, शिक्षा, जागरूकता तथा पोषण स्तर में वृद्धि होने लग जाती है।

आयु प्रत्याशा– एक औसत व्यक्ति अनुमानत: कितने वर्षों तक जीवित रहेगा। इसकी गणना एक निश्चित अवधि के दौरान एक आयु विशेष में मृत्यु दर सम्बन्धी आँकड़ों के आधार पर की जाती है।

पराश्रितता (निर्भरता) अनुपात– 15 वर्ष से कम तथा 64 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लोगों की संख्या को कार्यशील जनसंख्या अर्थात् 15 से 64 वर्ष के बीच के लोगों की संख्या से भाग देने से प्राप्त संख्या।

बढ़ता पराश्रितता अनुपात चिंता का विषय होता है कारण कि कार्यशील जनसंख्या पर आश्रित लोगों का दबाव बढ़ जाता है। जबकि घटता पराश्रितता अनुपात आर्थिक संवृद्धि और समृद्धि का प्रतीक माना जा सकता है, कारण आश्रित लोगों की तुलना में काम करने वाले अधिक होते हैं। लेकिन ये अल्पकालीन स्थिति होती है इसका कारण है आज के युवा कल के वृद्ध होंगे।

जनघनत्व– प्रति वर्गकिलोमीटर में रहने वाली जनसंख्या, जनसंख्या घनत्व कहलाती है। कारण कि देश का क्षेत्रफल तो निश्चित रहता है अत: बढ़ता जनघनत्व देश/राज्यों के संसाधनों पर अतिरिक्त भारत होता है।

भारत की जनसंख्या संरचना

जनसंख्या की दृष्टि से भारत का चीन के पश्चात् विश्व में दूसरा स्थान है तथा भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से सातवां। संयुक्त राष्ट्र के ताजा अनुमान (2015) के अनुसार भारत 2022 में विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन जायेगा। पूर्व में यह अनुमान 2030 तक का था।

भारत में पहली जनगणना 1872 में हुई थी। इसके पश्चात् 1881 के उपरान्त प्रति दस वर्ष में देश की जनगणना होती रही है।

भारतीय समाज की प्रवृत्ति एवं प्रकृति को जानने के लिए हमें जनसंख्या वृद्धि दर, जन्म दर, मृत्यु दर जीवन प्रत्याशा, लिंग अनुपात, जन घनत्व, साक्षरता, ग्रामीण नगरीय जनसंख्या आदि को जानना आवश्यक है।

I. भारत की जनसंख्या का आकार और वृद्धि

भारत की जनगणना 2011 के अनुसार भारत की जनसंख्या 121 करोड़ है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले भारत की जनसंख्या वृद्धि दर बहुत ऊँची नहीं रही, परन्तु आजादी प्राप्त करने के पश्चात् में बड़ी तेजी से जनसंख्या बढ़ी है। आजादी से पहले 1911 से 1921 के दशक में तो जनसंख्या में कमी हुई थी। इसका कारण 1918-19 के दौरान इंफ्लुएंजा महामारी का प्रकोप रहा जिसके कारण तत्कालीन समय की 5 प्रतिशत जनसंख्या अर्थात 1.25 करोड़ की मौत हो गई। आजादी के बाद 1961-71 के दशक में सर्वाधिक वृद्धि दर 24.8(दशकीय) फीसदी अंकित की गई। (देखिए सारणी-1)

सारणी-1

वर्ष	भारत की कुल जनसंख्या (लाखों में)	जनसंख्या औसत वार्षिक (गुणात्मक/वृद्धि दर ज्यामितीय) वृद्धि दर (प्रतिशत में)	दर दशकीय (प्रतिशत में)
1901	238	-	-
1911	252	0.56	5.8
1921	251	-0.03	-0.03
1931	279	1.04	11.0
1941	319	1.33	14.2
1951	361	1.25	13.3
1961	439	1.96	21.5
1971	548	2.22	24.8
1981	683	2.20	24.7
1991	846	2.14	23.9
2001	1028	1.93	21.3
2011	1210	1.64	17.64

स्त्रोत–भारत की जनगणना के विभिन्न अंक

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि आजादी के बाद भारत में जनसंख्या तेज रफ्तार से बढ़ी है। लगभग सवा अरब की जनसंख्या उपलब्ध संसाधनों को प्रभावित कर रही है। जनसंख्या की यह वृद्धि रोजगार, महंगाई, शिक्षा, चिकित्सा, आवास, प्रशासन, स्वच्छता, यातायात, संसाधनों का वितरण आदि पर प्रभाव डालती है।

जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या 6.86 करोड़ है जिसमें दशकीय वृद्धि 21.31 फीसदी है। भारत की कुल जनसंख्या का 5.66 प्रतिशत लोग राजस्थान में निवास करते हैं। भारत में सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जिसकी जनसंख्या 19.98 करोड़ है जो भारत की जनसंख्या का 16.50 प्रतिशत है। बिहार में देश की 8.60 फीसदी (10.41 करोड़), पश्चिम बंगाल में 7.54 प्रतिशत (9.13 करोड़), महाराष्ट्र में 9.28 प्रतिशत (11.2 करोड़) निवास करती है इस प्रकार इन पांच राज्यों में देश की कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग (47.58 प्रतिशत) निवास करता है।

II. भारत में जन्म दर एवं मृत्यु दर

जन्म-मृत्यु, स्वास्थ्य तथा औसत आयु से सम्बन्धी आँकड़ों को जन्म-मरण आंकड़े (Vital statistics) कहते हैं। भारत के सम्बन्ध में ये समंक अधिक विश्वसनीय नहीं कहे जा सकते। कारण कि यहाँ पर जन्म एवं मृत्यु का अनिवार्यत: पज ीयन नहीं करवाया जाता है।

जन्म दर–भारत में ऊँची जन्म दर का इतिहास रहा है अभी भी विकसित देशों की तुलना में भारत में जन्म दर ऊँची है। विभिन्न दशकों में भारत में अनुमानित जन्म दर इस प्रकार थी।

सारणी-2

भारत में जन्म दर

दशक	जन्म दर (प्रति हजार)
1921-30	46.4
1931-40	45.2
1941-50	39.9
1951-60	41.7
1961-70	41.1
1971-80	36.0
1981-90	29.3
1991-90	26.1
2001-2010	21.8

स्त्रोत–सेम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम

भारत में 1980-81 में जन्म दर (36.0) चीन को छोड़कर विश्व के सभी देशों में सर्वाधिक थी। वर्तमान में यह दर 21.8है। इसमें भी ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र में विषमता व्याप्त है। गाँवों में शहर की तुलना में जन्म दर ज्यादा है यह विषमता प्रान्तीय स्तर पर भी व्याप्त है।

मृत्यु दर– भारत में आजादी से पहले उच्च मृत्यु दर बनी हुई थी। 1930-31 में मृत्यु दर 36.3 प्रति हजार रही थी। वर्तमान में यह 2011 में 7.1 प्रति हजार है फिर भी विकसित देशों की तुलना में काफी है। भारत में अभी स्वास्थ्य का स्तर, जीवन स्तर, पौष्टिक आहार, चिकित्सा सुविधाएँ सभी की पहुँच में नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र में स्थितियाँ ज्यादा खराब है। विशेषकर चिकित्सा सुविधाओं को लेकर। मृत्यु दर में भी ग्रामीण-शहरी तथा प्रान्तीय विषमता काफी मात्रा में विद्यमान है।

सारणी-3

भारत में मृत्यु दर

दशक	मृत्यु दर (प्रति हजार)
1921-30	36.3
1931-40	31.2
1941-50	27.4
1951-60	22.8
1961-70	18.9
1971-80	14.8
1981-90	10.8
1991-90	8.7
2001-2010	7.1

किसी भी देश की जनसंख्या में वृद्धि और उसकी संरचना को प्रभावित करने में वहाँ की सामाजिक दशाओं, मृत्यु-दर, भ्रूण- हत्या, जन्म दर, बाँझपन, वैयक्तिक स्वतंत्रता, स्वास्थ्य की दशाएं, उत्पादन, विकास की गति, महत्वाकांक्षाएँ, शिक्षा का स्तर, तकनीक की अवस्था, चिकित्सा सुविधाएँ आदि का महत्पूर्ण योगदान रहता है। भारत में ऊँची जन्म दर के अनेक कारण हैं–गर्म जलवायु, बाल विवाह, विवाह की अनिवार्यता, भाग्यवादिता, ग्रामीण क्षेत्रों में भी चिकित्सा सुविधाओं की पहुँच, संयुक्त परिवार, पुत्र की कामना, दूरदराज के क्षेत्र में मनोरंजन के अन्य साधनों का अभाव, महिला शिक्षा का स्तर निम्न, जातीय एवं धार्मिक कारक, परम्परागत मान्यताएँ आदि।

पिछले दशकों (सारणी-2 एवं 3) में जनसंख्या वृद्धि धीरे-धीरे कम होती दृष्टिगत हो रही है। राजस्थान में अभी भी जन्म दर (26.2) तथा मृत्यु दर (6.7) के बीच का अन्तर राष्ट्रीय औसत से अधिक बना हुआ है।

III. भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना तथा जीवन प्रत्याशा

भारत युवाओं का देश है तथा वर्तमान तक जीवन प्रत्याशा (औसत आयु) भी अधिकांश देशों की तुलना में कम है। सारणी-4 से स्पष्ट है कि 1971 में 15 वर्ष से कम आयु वर्ग का हिस्सा भारत में 42 प्रतिशत था जो 2011 में घटकर 29 प्रतिशत पर आ गया है। तथा 15 से 60 वर्ष आयु समूह का हिस्सा 53 प्रतिशत से बढ़कर 63 प्रतिशत तक पहुँच गया है। जबकि 60 वर्ष से अधिक आयु समूह का भाग जो 5 प्रतिशत या अब धीरे-धीरे बढ़ने की ओर अग्रसर है तथा 2011 में 8 प्रतिशत हो गया है। अगले डेढ़ दशक में भारत की जनसंख्या की आयु संरचना में बड़ा बदलाव आने की संभावना है तथा यह परिवर्तन अधिकांशत: आयु समूह के दोनों छोरों पर होगा। सारणी 4 से स्पष्ट है कि 2026 तक 0-14 वर्ष आयु समूह की सहभागिता 23 प्रतिशत तथा 60 से ऊपर आयु समूह की सहभागिता 12 प्रतिशत हो जायेगी।

सारणी-4

भारत की जनसंख्या की आयु संरचना, 1961-2026

वर्ष	आयु वर्ग			योग
	0-14 वर्ष	15-59 वर्ष	60 वर्ष से अधिक	
1961	41	53	6	100
1971	42	53	5	100
1981	40	54	6	100
1991	38	56	7	100*
2001	34	59	7	100
2011	29	63	8	100
2026	23	64	12	100*

स्त्रोत– भारत की जनगणना-जनसंख्या प्रक्षेपण भारत एवं राज्यों के लिए (2026तक)

* योग में 100 निकटतम अंशों को पूर्णांकों में बदलने के कारण नहीं हो पया है।

सारणी-5

भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (2001-2026)

वर्ष	जीवन प्रत्याशा (वर्ष में)
2001-05	66.1
2006-10	{8.1
2011-15	69.6
2016-20	71.1
2021-25	72.3

सारणी-4 एवं सारणी 5 का तुलनात्मक अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि भारत में भी आने वाले दशकों में 60 वर्ष से अधिक आयु समूह में विस्तार होने वाला है अर्थात् कार्यशील जनसंख्या पर बुजुर्गों का भार बढ़ने वाला है।

जीवन प्रत्याशा का बढ़ना अर्थात् औसत आयु का बढ़ना देश में चिकित्सा सुविधाओं, पोषण स्तर, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के सन्दर्भ में जागरुकता, स्वच्छता व जीवन स्तर में सुधार की ओर सकारात्मक संकेत है।

IV भारत में प्रजनन दर

किसी भी देश की जनसंख्या के ढांचे के निर्धारण में जन्म, मृत्यु, जीवन प्रत्याशा के साथ-साथ प्रजनन दर भी महत्वपूर्ण होती है। प्रजनन दर समाज की प्रथाओं, परम्पराओं, महिलाओं में शिक्षा, शिशु मत्यु दर, जीवन प्रत्याशा, महिलाओं की निर्णय (प्रजनन सम्बन्धी) में सहभागिता, स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति आदि के बारे में संकेत होती है।

सारणी-6

भारत में प्रजनन दर

वर्ष	कुल प्रजनन दर (प्रति महिला)
1971	5.2
1981	4.5
1991	3.6
2001	3.2
2011	2.4

स्त्रोत– भारत की जनगणना के आँकड़े

सारणी 6 से स्पष्ट है कि भारतीय महिला की अपने पूर्ण जीवन काल में बच्चों की औसत संख्या जो 1971 में 5.2 थी वह 2011 तक 2.4 आ गई है। यह अभी भी विकसित राष्ट्रों से ऊपर है।

V. भारत में जन घनत्व–

एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में जितने लोग निवास करते हैं, वह जनसंख्या घनत्व कहलाता है। भारत का जनसंख्या घनत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है। जन घनत्व सामाजिक सम्बन्धों, सामाजिक प्रक्रियाओं, जीवन स्तर, प्रशासनिक एवं राजनैतिक स्थितियों, सामाजिक संगठन आदि को प्रभावित करता है। भारत में विश्व की 18 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, जबकि विश्व की 2.4 प्रतिशत भूमि ही भारत के पास है।

सारणी-7 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि जहाँ 1951 में (आजादी के तुरन्त पश्चात् की प्रथम जनगणना के समय) भारत में प्रति वर्ग किलोमीटर 114 लोग निवास करते थे, वहीं 2011 में 3.35 गुना अधिक अर्थात् 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में निवास करते हैं। इसमें व्यापक क्षेत्रीय विभिन्नताएँ निहित हैं। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार बिहार (1102) सर्वाधिक जनघनत्व वाला राज्य है, इसके पश्चात् पश्चिम बंगाल (1029) है। राजस्थान में जनघनत्व 201 प्रति वर्ग किमी. है। सबसे कम जन घनत्व अरुणाचल प्रदेश (17) का है। वहीं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 11297 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर में निवास करते हैं।

सारणी-7

भारत में जन घनत्व

वर्ष	जन घनत्व (व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर)
1951	114
1961	139
1971	173
1981	216
1991	267
2001	325
2011	382

स्त्रोत– भारत की जनगणना 2011 (प्रोविजनल आंकड़े)

VII. भारत में साक्षरता

ज्ञान आधारित समाज एवं अर्थव्यवस्था में व्यक्ति का शिक्षित होना आवश्यक होता है। शिक्षित होने की प्राथमिक एवं अपरिहार्य शर्त साक्षर होना है। शिक्षित व्यक्ति के लिए आजीविका के कई विकल्प विद्यमान हो जाते हैं। इसके साथ ही वह जीवन की श्रेष्ठ दशाओं यथा–उत्तम स्वास्थ्य, स्वच्छता, कम जनसंख्या, पोषण स्तर, चिकित्सकीय परामर्श, उत्तम जीवन स्तर, खान-पान, रहन-सहन, यातायात, सुशासन, जनसंचार आदि के प्रति जागरूक हो जाता है।

आजादी के पश्चात् भारत में साक्षरता की दर तेज गति से बढ़ी है। फिर भी आज भी भारत में बढ़ती जनसंख्या के कारण बड़ी संख्या में निरक्षर लोग मौजूद हैं। सारणी-8का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि महिलाओं में साक्षरता की दर पुरुषों में साक्षरता की दर से लगभग 17 प्रतिशत कम है। यद्यपि स्त्रियों में साक्षरता दर में वृद्धि पुरुषों की तुलना में अधिक है। इसका कारण स्त्रियों में साक्षरता का बहुत निचले स्तर से आगे बढ़ना है। इसके अतिरिक्त साक्षरता के सन्दर्भ में क्षेत्रीय एवं विभिन्न सामाजिक समूहों में काफी अन्तर देखने को मिलता है। 2011 की जनगणना के अनुसार सात राज्य उत्तर प्रदेश (69.72), जम्मू एवं कश्मीर (68.74), आन्ध्र प्रदेश (67.66), झारखण्ड (67.63), राजस्थान (67.06), अरुणाचल प्रदेश (66.95), बिहार (63.82), भारतीय औसत (74.04) से नीचे है। इसके अतिरिक्त अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों में भी साक्षरता दर निम्न है। इन समुदायों में स्त्रियों की साक्षरता दर और भी ज्यादा निम्न है। एक तरफ केरल जैसा उच्च साक्षरता दर वाला राज्य है तो दूसरी तरफ बिहार जैसा कम साक्षरता वाला राज्य है।

साक्षरता दर में व्याप्त असमानताएँ पीढ़ियों में असमानताएँ उत्पन्न करती हैं। निरक्षर माता-पिता के लिए अपनी सन्तानों को अच्छी शिक्षा दिलवाना प्राय: सम्भव नहीं होता है। इसलिए ये असमानताएँ आगे भी निरन्तर बनी रहती है।

सारणी-8

भारत में साक्षरता दर

वर्ष	व्यक्ति	पुरुष	स्त्रियाँ	स्त्री-पुरुष अन्तर
1951	18.3	27.2	8.9	18.3
1961	28.3	40.4	15.4	25.1
1971	34.5	46.0	22.0	24.0
1981	43.6	56.4	29.8	26.6
1991	52.2	64.1	39.3	24.8
2001	65.4	75.9	54.2	21.7
2011	74.04	82.14	64.46	16.68

(7 वर्ष और उससे अधिक आयु वाली जनसंख्या का प्रतिशत)

स्रोत– भारत की जनगणना

VIII. भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात (लिंगानुपात)

स्त्री-पुरुष अनुपात किसी देश की जनसंख्या में लैंगिक संतुलन अथवा असंतुलन का महत्वपूर्ण संकेतक होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से स्त्री-पुरुष अनुपात स्त्रियों के पक्ष में रहा है यानी प्रति 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या आमतौर पर 1000 से कुछ ऊपर ही रहती आयी है। लेकिन भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात विगत एक शताब्दी से भी अधिक समय से गिरता जा रहा है। सारणी-9 से स्पष्ट है कि 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ 1901 में भारत में प्रति 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या 972 थी जो 21वीं शताब्दी के प्रारम्भ 2001 में घटकर 933 हो गई। 2011 की जनगणनानुसार यह अनुपात 7 अंक बढ़कर 940 हो गया है।

लिंगानुपात के संदर्भ में अधिक चिंतनीय एवं भयावह तस्वीर प्रस्तुतक िह`ब ालि लंगानुपातन`।1 961स`(0-6)अ ायुस मूहक ा लिंगानुपात का लेखा-जोखा रखना प्रारम्भ किया गया जो उस समय समग्र लिंगानुपात से काफी ऊपर 976था। यह परम्परा गिरावट के साथ किन्तु 1991 (945) तक जारी रही। भारत की जनगणना के इतिहास में पहली बार 2001 में बाल लिंगानुपात (927), समग्र लिंगानुपात (933) से नीचे आ गया। 2011 की जनगणना के आंकड़े और भी अधिक भयावह तस्वीर भविष्य के संदर्भ में प्रस्तुत कर रहे हैं। 2011 में बाल लिंगानुपात घटकर 914 जो कि अब तक न्यूनतम है तथा समग्र लिंगानुपात 940 से काफी नीचे चला गया है।

किसीस माजक स्‍ त्री-पुरुषअ नुपातउ सस माजक ीप रिवार, विवाह तथा नातेदारी जैसी संस्थाओं का स्वरूप एवं उनमें सम्बन्धों की प्रकृति निर्धारित करता है। एक विवाह, बहु पत्नी विवाह, बहुपति विवाह जैसी प्रथाओं के साथ ही सामाजिक समस्याओं अपहरण, व्यभिचार एवं वेश्यावृत्ति के पीछे भी लिंगानुपात का असंतुलन उत्तरदायी होता है।

सारणी-9

भारत में समग्र तथा बाल (0-6वर्ष) लिंगानुपात

वर्ष	स्त्री-पुरुष अनुपात (समग्र)	पिछले दशक की तुलना में अन्तर	बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (0-6वर्ष)	पिछले दशक की तुलना में अन्तर
1901	972	-	-	-
1911	964	-8	-	-
1921	955	-9	-	-
1931	950	-5	-	-
1941	945	-5	-	-
1951	946	+1	-	-
1961	941	-5	976	-
1971	930	-11	964	-12
1981	934	+4	962	-2
1991	927	-7	945	-17
2001	933	+6	927	-18
2011	940	+7	914	-13

स्रोत– भारत की जनगणना

सारणी-10

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में समग्र तथा बाल लिंगानुपात

वर्ष	समग्र		बाल (0-6वर्ष)	
	ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र	ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र
2001	946	900	934	906
2011	947	926	919	902

स्रोत– भारत की जनगणना

भारत में लिंगानुपात समग्र एवं बाल दोनों ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्र में सर्वाधिक असन्तुलित है। इसका अभिप्राय यह निकलता है कि शिक्षित लोगों ने चिकित्सकीय सुविधाओं का दुरुपयोग अधिक किया है इसका कारण है विकास के साथ मातृ मृत्यु-दर में कमी आयी है। इसकी वजह पोषण, सामान्य शिक्षा, चिकित्सा एवं संचार की सुविधा में सुधार है। जबकि मृत्यु-दर घटी है तो लिंगानुपात में असंतुलन का एकमात्र कारण शेष रहता है कन्या शिशु को जन्म लेने से रोकना और ऐसा इसलिए किया जा रहा है कि आज भी बालिकाओं के साथ समाज का रवैया भेदभावपूर्ण है। इसी भेदभाव के चलते यदि कन्या शिशु जन्म लेने में सफल भी हो जाती है तो उसे मार दिया जाता है। सोनोग्राफी (अर्थात् अल्ट्रासाउंड, प्रौद्योगिकी पर आधारित एक्सरे जैसी तकनीक) जो मूल रूप से भ्रूण के जननिक या अन्य विकारों का समय रहते पता लगाकर निदान करने के लिए विकसित की गई थी। परन्तु वर्तमान में कठोर सरकारी प्रतिबन्धों के उपरान्त भी भ्रूण के लिंग का पता लगाने तथा चयनात्मक आधार पर बालिका भ्रूण को गर्भ में ही नष्ट कर देने के लिए काम में ली जाती है।

इस बात को इस तथ्य से अधिक बल मिलता है कि निम्नतम बाल लिंगानुपात भारत के समृद्धतम क्षेत्रों जैसे पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, दिल्ली, गुजरात तथा महाराष्ट्र जैसे इलाकों जिनमें प्रति व्यक्ति आय तुलनात्मक रूप से काफी अधिक है में देखने को मिल रहा है। इससे स्पष्ट है कि चयनात्मक गर्भपात की प्रवृत्ति बेटी के विवाह में दहेज के देने के डर से गरीबों एवं अज्ञानियों की नहीं है।

लिंग चयन प्रतिषेध अधिनियम-1994 जिसमें 2016 तक विभिन्न कठोर प्रावधान और जोड़े जा चुके हैं फिर भी यह कृत्य बन्द नहीं हो रहा है।

कन्याओं के प्रति पूर्वाग्रह की धारणाएँ एवं उनकी सुरक्षा से जुड़ी चिन्ताओं का दीर्घकालीन समाधान सामाजिक अभिवृत्तियों में बदलाव पर अधिक निर्भर करता है।

विगत विवेचन से स्पष्ट है कि भारतीय समाज जनांकिकीय संरचना के विविध आयामों के संदर्भ में काफी विविधतापूर्ण है। इस विविधता ने एक समाज के रूप में भारत की अर्थव्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था तथा राजनीति को भी प्रभावित किया है। एक तरफ अरुणाचल प्रदेश जैसा विरल जनसंख्या वाला क्षेत्र है तो दूसरी तरफ बिहार जैसी घनी आबादी वाला क्षेत्र है। एक ओर जहाँ केरल जैसा उच्च साक्षरता वाला राज्य है वहीं दूसरी तरफ बिहार जैसा न्यून साक्षरता वाला इलाका है। जनसंख्याम ेंव ृद्धिक ीप ्रवृत्ति,ि लंगअ ाधारितच यनात्मकि नषेधक ी प्रवृत्ति, जीवन की प्रत्याशा आदि में व्यापक क्षेत्रीय भिन्नताएँ निहित हैं, जिन्होंने केन्द्रीय स्तर पर समान योजनाओं को लागू करने में बाधा ही उत्पन्न की है। साथ ही ये विभिन्नताएँ व्यवहारों में भी अन्तर प्रकट करती है जो भारत की बहुरंगी संस्कृति की अवधारणा को मजबूत करती है।

ग्रामीण-नगरीय विभाजन (विभिन्नताएँ)

गाँव तथा नगर की परिभाषाएँ इकाई-1 में दी जा चुकी है। यहाँ हम इन दोनों समुदायों में विभिन्नताओं की विभिन्न संदर्भों में विवेचना करेंगे। भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया दिनों दिन तेज होती जा रही है। आकार एवं व्यवहार दोनों ही संदर्भों में ग्रामीण भारत बदल रहा है। फिर भी ऐसे काफी प्रतिमान विद्यमान है। जो इन दोनों अवधारणाओं में भारतीय परिप्रेक्ष्य में विभिन्नता प्रकट करने के लिए उपयुक्त है-

I. आकार अथवा जनसंख्या

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत में लगभग 90 प्रतिशत आबादी गाँवों में निवास करती थी। इसका अभिप्राय यह हुआ कि 10 में से 9 व्यक्ति गाँव में तथा 1 व्यक्ति शहर या कस्बे में रहता था। 110 वर्ष पश्चात् यह अनुपात बदला है तथा अब पहले से तीन गुणा अधिक व्यक्ति शहर या कस्बों में निवास करने लगे हैं।

सारणी-11

भारत में ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या

वर्ष	जनसंख्या (दस लाख में)		कुल जनसंख्या का प्रतिशत		
	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय	अन्तर (%)
1901	213	26	89.2	10.8	-
1911	226	26	89.7	10.3	-.5
1921	223	28	88.8	11.2	+.9
1931	246	33	88.0	12.0	+.8
1941	275	44	86.1	13.9	+1.9
1951	299	62	82.7	17.3	+3.4
1961	360	79	82.0	18.0	+.7
1971	439	109	80.1	19.9	+1.9
1981	524	159	76.7	23.3	+3.4
1991	629	218	74.3	25.7	+2.4
2001	743	286	72.2	27.8	+2.1
2011	833	377	68.84	31.16	+3.4

स्रोत– भारत की जनगणना 2011

सारणी-11 के आँकड़े केवल संख्या अथवा आकार परिवर्तन का ही संकेत नहीं हैं अपितु आधुनिक विकास की अवधारणा से भी सम्बन्धित हैं। आधुनिक विकास के प्रारूप ने कृषि आधारित ग्रामीण जीवनशैली का आर्थिक एवं सामाजिक महत्व, उद्योग आधारित नगरीय जीवनशैली के महत्त्व की अपेक्षा कम किया है जो कि एक वैश्विक प्रक्रिया का भाग है।

II. विवाह, परिवार एवं नातेदारी

भारतीय ग्रामीण सामाजिक संरचना में अधिकांशत: विस्तृत एवं संयुक्त परिवार देखने को मिलते हैं, जिसमें मुखिया का नियंत्रण होता है। तीन या चार पीढ़ियों के सदस्य एक ही स्थान पर निवास करते हैं। इनका भोजन, पूजन एवं सम्पत्ति सामूहिक होती है। ग्रामीण परिवार उत्पादन एवं उपयोग की इकाई होते हैं। जबकि नगरीय सामाजिक संरचना में परिवार अधिकांशत एकाकी होते हैं, जिसमें दो पीढ़ियाँ ही निवास करती हैं। पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे।

ग्रामीण विवाह दो परिवारों को जोड़ने वाली कड़ी माना जाता है। विवाह उपजाति में ही स्वीकृत होता है। ग्रामीण समूह में विवाह एक अनिवार्य संस्था होती है। प्राय: गाँवों में विवाह की आयु कम होती है। निम्न जातियों में विधवा पुनर्विवाह होते रहे हैं जबकि उच्च जातियों में परम्परागत रूप से नहीं होते हैं। वर्तमान काल में ये परम्परा बदलती दिखाई देती है। गाँव में तलाक को घृणित दृष्टि से देखा जाता है। परम्परागत रूप से तलाक की स्वीकृति नहीं है। जबकि नगरीय समुदाय में विवाह को संस्कार के स्थान पर समझौता मानने की प्रवृत्ति बढ़ी है। तलाक स्वीकृत है। विवाह की आयु भी गाँव की तुलना में अधिक होती है। जाति /उपजाति से बाहर भी अपवादस्वरूप विवाह दिखाई पड़ते हैं। महानगरों में अविवाहित जोड़ों का एक साथ रहना (लिव इन) विवाह को एक अनिवार्य संस्था के रूप में चुनौती प्रदान कर सकती है। विवाहेत्तर सम्बन्ध, पूर्वविवाह सम्बन्ध भी शहरी समाज में देखने-सुनने को मिलते हैं। विधवा पुनर्विवाह को कानूनन स्वीकृति है।

ग्रामीण समुदाय में सम्बद्धता नातेदारी सम्बन्धों के कारण होती है। आस-पास के गाँव जन्म (रक्त सम्बन्धी) या विवाह सम्बन्धी नातेदारी सम्बन्धों से जुड़े होते हैं। इससे उनके मध्य सामूहिकता का भाव रहता है, जिससे सामाजिक नियंत्रण बना रहता है। गाँव में व्यक्ति की पहचान ही परिवार एवं नातेदारी सम्बन्धों के आधार पर होती है। शहरी क्षेत्र में नातेदारी के सम्बन्ध अत्यन्त ढीले होते हैं। वहाँ व्यक्ति की पहचान उसकी व्यक्तिगत योग्यता एवं अर्जित प्रस्थिति (हैसियत) से होती है। नातेदारी एवं परिवार अमहत्वपूर्ण होते जा रहे हैं।

III. जाति

ग्रामीण सामाजिक संरचना का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आधार है जाति। जाति का निर्धारण जन्म से होता है। गाँवों में जातीय संस्तरणात्मक व्यवस्था पाई जाती है। प्रत्येक जाति का एक परम्परागत व्यवसाय होता है। जाति का अन्य जातियों के साथ खान-पान तथा व्यवहार के सम्पर्क के नियम होते हैं। एक जाति दूसरी जाति से जजमानी प्रथा से बंधी होती है। जाति की एक जातीय पंचायत होती है जो जाति के सदस्यों को नियंत्रित करतीहै ाज ातीयि नयमोंक ेन हींम ाननेव ालोंक ोब हिष्कृतअ थवा दण्डित करती है अर्थात् न्यायालय का कार्य भी करती है। शहरों में जातीय बन्धन शिथिल हैं। यहाँ व्यवसाय, खान-पान, आपसी व्यवहार आदि व्यक्ति की व्यक्तिगत योग्यता से निर्धारित होते हैं। जजमानी प्रथा का अस्तित्व नहीं होता है तथा न ही जातीय पंचायत प्रभावी होती है। नगरीय समुदाय में संस्तरण का आधार जाति न होकर उनकी अर्जित हैसियत होता है।

IV. स्थानीय स्वशासन

गाँव में स्थानीय स्वशासन की इकाई ग्राम पंचायत होती है जो ग्रामीण सत्ता एवं शक्ति का केन्द्र होती है। परम्परागत पंचायतें जो अन्तर्वैयक्तिक एवं अन्तर्जातीय सम्बन्धों के निर्धारण में महत्वपूर्ण होती थीं,के स् थानप रव र्तमानमें प ंचायतीराजके द्व ारान यीप ंचायतोंक ी व्यवस्था की गई है, जिनमें परिवार, जाति, वंश के स्थान पर निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं। इस नवीन व्यवस्था ने परम्परागत शक्ति संरचना को बदलकर, नेतृत्व, गुटबन्दी तथा दलीय प्रणाली के नये आयामों को उत्पन्न किया है। गाँव की सफाई, रोशनी, शिक्षा, संघर्षों का निपटारा, चरागाह भूमि की सुरक्षा, विकास एवं न्यायिक कार्य आदि ग्राम पंचायत के अधिकार क्षेत्र हैं।

नगरीय क्षेत्र में स्थानीय स्वशासन की इकाई नगर पालिका, परिषद या निगम होती है। इसका नेतृत्व परम्परागत न होकर निर्वाचित होता है। जहाँ गाँवों में पंचायती राज के अन्तर्गत ग्राम पंचायतें दलीय व्यवस्था से दूर होतीहैं व हींन गरीयस मुदायमें स् थानीयस् वशासनक ाइ काईद लीय व्यवस्था के अधीन ही होती है।

V. आर्थिक संस्थाएँ

ग्रामीण भारत में परम्परागत तौर पर अधिकांश लोग कृषि, पशुपालन से जुड़े रहे हैं। एक जाति, दूसरी जाति की जजमानी व्यवस्था के तहत सेवा करती रही है। वह सेवा के बदले पुन: सेवा प्राप्त कर सकती है, वस्तुओं में अथवा नकद भुगतान प्राप्त कर सकती है। गाँव में प्रत्येक जाति का अपना व्यवसाय रहा है, जिससे वे गाँव की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहे हैं। जातियों का नामकरण भी व्यवसाय के आधार पर ही रहा हैजैसे-लुहार,कु म्हार,सु नार,तेली,क ाश्तकार,रंगरेज,ध ोबी,न ाई, खाती आदि। वर्तमान में जजमानी व्यवस्था भी धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खो रही है। मुद्रा अर्थव्यवस्था ने तथा कृषि के अलाभकारी होने से ग्रामीण लोग भी परिवहन सेवा, व्यवसाय अथवा शिल्प निर्माण जैसे कृषि से भिन्न कार्यों को अपनाते जा रहे हैं।

नगरीय भारत में व्यवसायों की बहुलता है। अधिकांश जनसंख्या निर्माण तथा सेवा क्षेत्र से जुड़ी हुई है। सेवा के बदले मुद्रा व्यवस्था प्रचलित है। व्यवसाय का आवश्यक रूप से जाति से सम्बन्ध नहीं है। व्यक्ति अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुसार व्यवसाय का चयन करते हैं। दवा, कपड़ा, चमड़ा, ऊन, मशीन निर्माण, प्लास्टिक, बारूद, सीमेण्ट, माचिस, बीड़ी, सिगरेट, लोहा, कागज, ईंट, रोजगार प्राप्ति में सहायता आदि अनेक व्यवसाय नगरों में देखने को मिलते हैं।

VI. धर्म

भारतीय गाँव धर्म प्रधान हैं। बारह महीनों, सुबह से शाम, जन्म से मृत्यु तक ग्रामीण जीवन धर्ममय होता है। प्रत्येक गाँव में एक से अधिक मन्दिर, देवरे मिलते हैं। एक ग्रामीण के जीवन के धार्मिक संस्कार एवं उत्सव अभिन्न अंग हैं। गाँव के सभी लोग साथ मिलकर त्योहार एवं उत्सव मनाते हैं। धर्म ने गाँवों के लोगों में सहयोग, सहिष्णुता तथा एकीकरण के भाव उत्पन्न किए हैं। धार्मिक प्रवृत्ति ने ग्रामीण समुदाय को एक सीमा तक भाग्यवादी बना दिया है।

नगरीय समुदाय में ग्रामीण समुदाय की तुलना में धर्म निरपेक्षता के गुण अधिक पाये जाते हैं। औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण एवं आधुनिकीकरण ने नगरीय लोगों को भाग्य के स्थान पर कर्म पर विश्वास करने की ओर अग्रसर किया है। तकनीक के प्रयोग, आधुनिकतम जनसंचार के साधनों की उपलब्धता विशेषकर टी.वी., मोबाइल एवं इण्टरनेट ने लोगों में पश्चिमी मूल्यों की पैठ बढ़ाई है। होली, दीपावली, रक्षाबन्धन के साथ-साथ वेलेन्टाइन डे एवं फ्रेन्डशिप डे भी लोकप्रिय हो रहे हैं।

VII. शैक्षणिक संस्थाएँ

गाँवों में औपचारिक से ज्यादा अनौपचारिक शिक्षण होता है। अनौपचारिक शिक्षण संस्थाओं में जाति, परिवार, बुजुर्ग लोग तथा मित्र समूह (खेल समूह) प्रमुख हैं। जाति अपने सदस्यों को संस्तरणात्मक व्यवहार सिखाती है। परिवार ही व्यापार, खेती एवं दस्तकारी का ज्ञान अपने सदस्यों को करवाता है। लुहार, सुनार, नाई, तेली, ढोली, कृषक, रंगरेज, पुजारी अपने परम्परागत व्यावसायिक ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी सन्तानों को हस्तान्तरित करते हैं। अब गाँवों में भी औपचारिक शिक्षा केन्द्र खुल रहे हैं।

नगरीय समाज में प्रशिक्षण एवं शिक्षण का कार्य अधिकांशत: औपचारिकस ंस्थाओंमें ह ोताहै ।अ ाधुनिकश िक्षामें व् यावसायिक, तकनीकी, चिकित्सा तथा प्रबन्धन जैसे विषय सम्मिलित हैं, जिन्हें नगर के विद्यार्थी परिवार, जाति, बुजुर्ग समिति एवं खेल समूह से बाहर जाकर सीखता है। नगर में शिक्षा के बड़े केन्द्र महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान आदि होते हैं, जिनमें योग्यता के आधार पर एवं रुचि आधारित पाठ्यक्रम चुनने की स्वतन्त्रता विद्यमान होती है।

VIII. परिवर्तन, प्रतिमान एवं मूल्य

गाँवों में परम्पराएँ अधिक प्रभावी होती हैं। इनमें बदलाव का विरोध सामान्यत: पाया जाता है। समकालीन समय में सरकार की योजनाओं के फलस्वरूप गाँवों में विकास की गति बढ़ी है, जिसके कारण जमींदारी, जजमानी, जातीय संस्तरण, महिलाओं की प्रस्थिति, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि आदि में काफी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। नगरीय समाज में परिवर्तन की गति अपेक्षाकृत अधिक तेज है। प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ-साथ सोशल मीडिया भी इस गति को बढ़ा रहा है।

ग्रामीण समुदाय में व्यवहार के प्रतिमान एवं मूल्य आज भी काफी हद तक पारम्परिक हैं। जबकि नगरीय समुदाय में ये सब औपचारिक हैं। नगरीय व्यवहार में तर्क प्रधान होता है। लाभवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए लोग दूसरों से अन्त: क्रिया करते हैं।

IX. समरूपता एवं विभिन्नता

ग्रामीण सामाजिक संरचना 21वीं शताब्दी में भी काफी हद तक समरूप है। निश्चित व्यवसाय, सीमित आवश्यकताएँ एक सा पहनावा, खान-पान, रहन-सहन, भाषा बोली, धर्म एवं जातियाँ, परिवार, विवाह का प्रकार आदि गाँव को एक समरूप इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

नगरीय सामाजिक संरचना इन्हीं उपर्युक्त आधारों पर व्यापक विभिन्नता लिये हुए है। नगरीय क्षेत्र बहुधार्मिक, बहुव्यावसायिक, महत्वाकांक्षी लोगों के निवास क्षेत्र हैं, जिनमें खान-पान, रहन-सहन, भाषा बोली, पहनावा, परिवार एवं विवाह के संदर्भ में काफी विषमताएँ देखने को मिलती है।

X. सामूहिकता तथा व्यक्तिवादिता

गाँवों में 'परिवार' सबसे छोटी सामाजिक इकाई है सामाजिक संरचना की। व्यक्ति की पहचान ही उसके परिवार एवं नातेदारों के आधार पर होती है। उत्पादन एवं उपभोग भी परिवार के रूप में ही होता है। निर्णय भी सामूहिक आधार पर लिए जाते हैं। परिवार के मुखिया की भूमिका अधिकांश मामलों में महत्वपूर्ण होती है। उसके निर्णय प्राय: व्यक्तिगत हित में ना होकर पारिवारिक सामाजिक हित को ध्यान में रखकर होते हैं जो सामान्यत: सदस्यों के लिए बाध्यताकारी होते हैं।

नगरोंम`" व्यक्ति'स माजक ीम हत्वपूर्णइ काईह ेताह` ।व हाँ व्यक्तिगत हित एवं स्वतंत्रता का मूल्य सर्वोच्च स्थान पर होता है। व्यक्ति स्वयं के हितों की अधिकतम पूर्ति चाहता है तथा इसी दिशा में प्रयासरत रहता है। इस प्रकार नगरीय सामाजिक संरचना में 'व्यक्ति की स्वतन्त्रता' की रक्षा प्रत्येक कीमत पर होनी चाहिए। शिक्षा, चिकित्सा, भोजन, आवास, सुरक्षा सभी में व्यक्तिवादिता की सोच नगरीय समाज में व्याप्त रहती है।

XI. सामान्यीकरण एवं विशेषीकरण (श्रम विभाजन)

गाँवों में परम्परागत रूप से व्यवसायों का विभाजन जातीय आधार पर होता था। जजमानी प्रथा के कमजोर पड़ने से उनमें सामान्यीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी है। यद्यपि समकालीन परिवर्तनों ने गाँवों में विशेषज्ञों की सेवाओं की तरफ रुझान बढ़ाया है। परन्तु यह अभी प्रारम्भिक स्तर पर ही है।

नगरीय संरचना में कार्य का बँटवारा देखने को मिलता है। एक व्यक्ति किसी एक ही कार्य का विशेषज्ञ होता है। श्रम विभाजन तथा श्रम विशेषीकरण ने प्रकार्यात्मक अन्तर्निर्भरता को बढ़ाया है। नगरीय क्षेत्र में लोग अपनी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न विशेषज्ञों पर निर्भर रहते हैं।

XII. सम्बन्धों की प्रकृति

ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों में प्राथमिक सम्बन्धों की अधिकता होती है। लोग आपस में प्राथमिक तथा आमने-सामने के सम्बन्धों से जुड़े होते हैं। हम की भावना का भाव लोगों में विद्यमान रहता है। लोगों के व्यवहार में सहजता, सरलता तथा अनौपचारिकता पाई जाती है।

नगरीय क्षेत्रों की जनसंख्या अधिक होने के कारण सभी लोगों में आमने-सामने के सम्बन्धों का होना कठिन होता है। लोगों में औपचारिकता कृत्रिमता का भाव व्यवहार में विद्यमान रहता है तथा द्वैतीयीक सम्बन्धों की प्रधानाता पायी जाती है।

XIII. गतिशीलता

गाँवों में गतिशीलता कम तथा स्थायीत्व अधिक पाया जाता है। गाँव सामाजिक एवं भौगोलिक दोनों ही परिप्रेक्ष्य में भाग-दौड़ से दूर तथा अपेक्षाकृत शांत एवं कम गतिशील हैं। उनके कार्य एवं अपेक्षाएँ लगभग नियत रहते हैं, जिनके लिए वे दैनिक चर्या के हिसाब से संलग्न रहते हैं।

नगर में सामाजिक एवं भौगोलिक गतिशीलता अधिक पाई जाती है। नगरीय लोगों की आर्थिक प्रगति एवं भौतिक संसाधनों को अधिक मात्रा में जुटाने की महत्वाकांक्षा ने उन्हें गतिशील बनाया है।

XIV. सहजता एवं सरलता

वर्तमान समय में भी ग्रामीण सामाजिक संरचना में सहजता एवं सरलता के तत्व विद्यमान हैं। ग्रामीण परिवार, विवाह, जाति, उपजाति, नातेदारी, मित्र समूह आदि में गाँव के सभी निवासी सहभागी रहते हैं कोई विशेषीकरण इनमें दिखाई नहीं पड़ता है। बनावटीपन एवं आडम्बर से ये बचे हुए हैं। जिन गाँवों का नगरों से सम्पर्क बढ़ा है वहाँ अवश्य कृत्रिमता एवं आडम्बर प्रवेश कर गया है।

नगरीय क्षेत्र में जटिलता तथा कृत्रिमता पाई जाती है। यहाँ परिवार, विवाह, जाति, वर्ग, विशेषीकृत समूह, रुचि समूह, स्वार्थ समूह, द्वैतीयक संस्थाएँ आदि जटिल रूप में विद्यमान होती हैं। व्यवहार में दिखावा, लाभवादी दृष्टिकोण, स्वार्थपरकता, इहलौकिक दृष्टिकोण नगरीय सामाजिक संरचना में केन्द्रीय स्थान पर रहते हैं।

XV. सामाजिक समस्याएँ

भारतीय गाँव समस्या विहीन नहीं हैं, परन्तु गाँवों की समस्याओं का समाधान सामान्यत: गाँव के स्तर पर ही निकाल लिया जाता है। कोर्ट-

कचहरी, पुलिस थाना, सामान्य प्रशासन आदि के हस्तक्षेप की आवश्यकता कम पड़ती है। गाँव की पंचायत, बुजुर्ग लोगों की समिति, गाँव के मसले गाँव में निपटाने में सक्षम रहते हैं, जिसमें सभी पक्षों की सहमति होती है। गाँव की समस्याएँ अति सामान्य प्रकार की होती हैं, उनमें जटिलताएँ नहीं होती हैं।

नगर में महत्वाकांक्षी, अपरिचित, द्वैतीयीक सम्बन्धों तथा दायित्वों से अधिकारों को वरीयता देने वाले लोगों का जमावड़ा होता है। आबादी घनी होती है।

XVI. सुरक्षा

ग्रामीण सामाजिक संरचना में गाँव का प्रत्येक व्यक्ति गाँव के लिए सिपाही होता है। अत: सुरक्षा को विशेष चर्चा का विषय नहीं होता। प्राथमिक सम्बन्ध, घनिष्ठता, सहयोग, भाईचारा आदि की भावनाओं के विद्यमान रहने से गाँव में सामान्यत: सुरक्षा सम्बन्धी प्रश्न नहीं उठते हैं।

नगरों में अपरिचय बोध, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, विभिन्नता, व्यक्तिवादिता आदि के कारण सुरक्षा एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है। चोरी, हिंसा, चौथवसूली, अतिक्रमण, अपहरण, मिलावट, जमाखोरी आदि नगरों की पहचान बनते जा रहे हैं। सामान्य व्यक्ति की इन सबसे सुरक्षा नगरीय प्रशासन के समक्ष चुनौती बना हुआ है।

XVII. मनोरंजन

सामान्यत: गाँव में मनोरंजन के परम्परागत साधन ही विद्यमान होते हैं। लोकगीत, उत्सव, बच्चों के खेल, बुजुर्गों के किस्से-कहानियाँ, पति-पत्नी के सम्बन्ध, अनौपचारिक सहजीवन आज भी अधिकांश गाँवों में मनोरंजन के माध्यम हैं। तकनीकी क्रान्ति ने अब गाँवों में मोबाइल, टी.वी., रेडियो आदि साधन पहुँचा दिये हैं। फिर भी परम्परागत साधन अभी भी ज्यादा प्रभावी हैं।

नगरीय समाज में मनोरंजन का केन्द्र परिवार से बाहर स्थित होता है। रंगमंच, सिनेमा, उत्सवों की झांकियाँ, संगीत, नृत्य एवं कला केन्द्र आदि नगर के मनोरंजन केन्द्र के रूप में नगर में विद्यमान होते हैं। इसके अलावा सार्वजनिक बाग-बगीचे, जिनमें खेलकूद, झूले आदि होते हैं। व्यापार मेले जो व्यापार की गतिविधियों के साथ-साथ मनोरंजन सुविधाएँ भी प्रदान करते हैं। नगर में लोगों के मनोरंजन साधन के रूप में प्रचलित हैं।

XVIII. सहयोग एवं प्रतिस्पर्धा

ग्रामीण समुदाय सहयोग पर आधारित है। एक-दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति आपसी सहयोग द्वारा की जाती है। गाँवों में मुद्रा के स्थान पर वस्तु विनिमय अधिक प्रभावी है। सेवा के बदले सेवा अथवा वस्तु की परम्परा ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था का आधार रही है। इसी कारण जजमानी प्रथा का अस्तित्व रहा है। यद्यपि गाँव बदलाव के दौर से गुजर रहे हैं तथापि आज भी सहयोग ग्रामीण जीवन की प्रमुख विशेषता है।

नगरीय क्षेत्रों में पूँजीवादी प्रवृत्तियों के चलते एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ रहती है। मुद्रा अर्थव्यवस्था के चलते लाभवादी दृष्टिकोण के कारण पूँजीवादी विकास की गलाकाट प्रतिस्पर्धा नगरीय जीवन की विशेषता है।

XIX. यातायात

गाँव में यातायात के परम्परागत साधनों का प्रयोग ज्यादा होता है, जिसमें पशुओं का प्रयोग किया जाता है। नदी, झील एवं तालाब वाले क्षेत्रों में हस्तनिर्मित एवं चलित नाव का उपयोग किया जाता है। शहरों से सम्पर्क वाले गाँवों में अब मोटरगाड़ी, मोटरसाइकिल आदि का प्रयोग होने लगा है। शहरी क्षेत्रों में यातायात के आधुनिकतम क्षेत्रों का प्रयोग होता है। बस, मोटर कार, ट्रक, रेल गाड़ी, वायुयान, मोटरबोट आदि का प्रयोग शहर के भीतर तथा नगर से दूसरे नगर तक पहुँचने के लिए किया जाता है।

XX. पहनावा अथवा फैशन

ग्रामीण पहनावा आसानी से नगरीय पहनावे से अलग पहचाना जा सकता है। ग्रामीण लोगों का पहनावा परम्परागत है उसमें बदलाव बहुत कम देखने को मिलते हैं। यद्यपि शहरों के नजदीक एवं सम्पर्क वाले क्षेत्रों में शहरी लोगों का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई देता है।

नगरीय लोगों की रुचियाँ पहनावे के सन्दर्भ में काफी परिवर्तनशील एवं परिष्कृत होती हैं। वस्त्र, केश-विन्यास एवं कला के क्षेत्र में नगर, गाँवों से भिन्न विशेषताएँ रखते हैं। इन संदर्भों में परिवर्तन की गति भी काफी तेज होती है। युवाओं एवं महिलाओं में फैशन सम्बन्धित आग्रह तथा अभिरुचियाँ, प्रौढ़ तथा पुरुषों की तुलना में अधिक दिखाई देती है।

XXI. तकनीक का इस्तेमाल

ग्रामीण क्षेत्र तकनीक के प्रयोग के मामले में नगरीय क्षेत्रों से पीछे हैं। नगरों में तकनीकी शिक्षा, प्रशिक्षण, उपलब्धता के कारण लोगों में अद्यतन तकनीक की जानकारी पायी जाती है। ग्रामीण क्षेत्र में तकनीक का प्रसार शहरों से ही होता है।

XXII. सांस्कृतिक परिवर्तन

नगर सांस्कृतिक आविष्कार, प्रसार एवं सम्पर्क के केन्द्र हैं। यहाँ सांस्कृतिक बदलाव की प्रक्रिया गाँवों की तरफ जाती है। नगरों में सांस्कृतिक बहुलता के कारण विभिन्न संस्कृतियों के सम्पर्क एवं परसंस्कृति ग्रहण की प्रक्रिया के कारण संस्कृति में परिवर्तन, परिष्कार एवं बदलाव होते रहते हैं।

ग्रामीण-नगरीय संलग्नता

गाँव तथा नगर के बीच विभाजन के होते हुए भी ये दोनों एक-दूसरे से पूर्णत: पृथक नहीं हैं। इन दोनों में समकालीन समय में आदान-प्रदान तथा अन्त:क्रिया में काफी वृद्धि हुई है। समकालीन समय में न तो गाँव पूर्णत: आत्मनिर्भर इकाई रहे हैं एवं न ही शहर अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम हैं। कच्चे माल, अनाज, सब्जियाँ, फल, दूध तथा सेवा क्षेत्र से जुड़ी सेवाओं के लिए तथा मानव श्रम हेतु नगर, गाँवों पर आश्रित हैं। वहीं शिक्षा, चिकित्सा, निर्मित माल अथवा वस्तुओं, आजीविका आदि के सम्बन्ध में गाँव, नगरों पर निर्भर हैं। इस प्रकार्यात्मक अन्तर्निर्भरता ने दोनों को एक-दूसरे के निकट लाकर इनमें

परस्पर प्रभाव डाला है। इसी कारण ग्रामीणीकरण, ग्राम्यनगरीकरण, नगरीकरण तथा ग्राम-नगरीय नैरन्तर्य आदि अवधारणाओं की उत्पत्ति हुई है।

निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर हम ग्रामीण-नगरीय संलग्नता को स्पष्ट कर सकते हैं-

1. मिश्रित जीवन- ग्रामीण जीवन पर नगरीय प्रभाव तथा नगरीय जीवन पर ग्रामीण प्रभाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं, विशेषकर उपनगरीय क्षेत्रों और कच्ची बस्तियों में मिली जुली जीवन शैली दिखाई पड़ती है।

2. तकनीक का प्रसार- नगरीय सम्पर्क के कारण गाँवों में तकनीक का प्रसार हो रहा है। मोबाइल, मोटरसाइकिल कृषि के उपकरण आदि की उपलब्धता में व्यापक वृद्धि हुई है।

3. पारस्परिक अन्तर्निर्भरता- कच्चा माल, अनाज, फल, सब्जियाँ, सेवा कार्य हेतु श्रमिक नगरों को गाँवों से मिलते हैं जबकि अच्छी शिक्षा, आधुनिक चिकित्सा, नल, बिजली, प्रशासन, सड़क, संचार एवं यातायात के आधुनिक साधन, सफाई की व्यवस्था आदि गाँवों को नगरों से मिलती है।

4. जनसम्पर्क एवं जनसंचार के साधन- रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, सोशल मीडिया जैसे जनसम्पर्क एवं संचार के साधन अब ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के समक्ष नगरीय जीवनशैली और उपभोग के स्वरूपों की तस्वीरें पेश कर रहे हैं, जिससे दूरस्थ गाँवों के लोग भी नगरीय जीवनशैली और सुख-सुविधाओं से सुपरिचित हो जाते हैं। जनसम्पर्क तथा जनसंचार के साधनों ने ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों के मध्य की खाई को पाटना प्रारम्भ कर दिया है। धीरे-धीरे ग्रामीण लोग उपभोक्ता बाजार से ज्यादा मजबूती से जुड़ता दिखाई दे रहा है।

5. गतिशीलता- नगरीय प्रभावों से गाँवों में गतिशीलता बढ़ रही है। ग्रामीण लोग अब परम्परागत व्यवसायों को छोड़कर शहरों में आजीविका हेतु पलायन कर रहे हैं। साथ ही आधुनिक शिक्षा एवं चिकित्सा के प्रति लोगों का रुझानबढ़ा है।

6. जीवनशैली का आकर्षण- नगरीय लोगों को गाँवों की सरलता, सादगी, शांति, सहजता, स्थिरता, भागदौड़ रहित, तनाव रहित जीवन ललचाता है। इसको देखने, अनुभव करने हेतु ग्राम्य पर्यटन को बढ़ावा मिला है। गाँव के लोगों को शहरी गतिशीलता, दिखावा, विलासिता, सुविधाएँ आदि आकर्षित करती हैं। दोनों ही पक्ष एक-दूसरे की विशेषताओं के प्रति आग्रही हैं।

7. परिवार की प्रवृत्ति का प्रभाव- ग्रामीण जाति एवं संयुक्त परिवारके भ ावनात्मकप क्षन ेश ाहरीज ीवनक ोत थाश ाहरीव र्गए वं एकाकी परिवार की धारणाओं ने गाँव को प्रभावित किया है।

8. लोकतन्त्र की बाध्यता- प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में मत की शक्ति प्रधान है इसलिए शहरों में रहने वाले नेताओं ने अपना आधार गाँव तक बढ़ाने का प्रयास किया है, जिसके लिए उन्हें गाँवों में भी शहरी सुख-सुविधाओं के पहुंचाने का वादा कर प्रयासरत किया है।

9. जनशक्ति का प्रभाव- लोकतंत्र में दबाव समूह बनाने के लिए धरने, प्रदर्शन, आन्दोलन आदि करने पड़ते हैं। इसके लिए जनशक्ति गाँवों से उपलब्ध होती है।

10. नगरीकरण की प्रक्रिया- नगर के निकट गाँवों तक बड़ा नगरों का तेज गति से विस्तार हुआ है, जिससे निकटस्थ गाँवों का तीव्र नगरी करण हुआ है, लेकिन वे अपनी सांस्कृतिक विरासत में पूर्णत: छूटे नहीं हैं इसलिए नगरों में गाँव दिखाई पड़ते हैं।

11. सांस्कृतिक प्रसार- संस्कारात्मक परिप्रेक्ष्य से भी गाँवों और नगरों के बीच सम्बन्ध विद्यमान हैं, गाँव के लोग कस्बों तथा नगरों में स्थित देवी-देवताओं तथा धार्मिक स्थलों पर जाते रहते हैं। इसके साथ ही आजीविका के लिए भी सुगम अवसर उपलब्ध होने से गाँव से नगरों की तरफ लोग जाते हैं। नगरों के लोग भी जहाँ कहीं गाँवों में धार्मिक स्थल हैं, वहाँ जाते रहते हैं। यातायात की सुगम व्यवस्था ने गाँव एवं नगर की दूरियाँ घटाई हैं।

12. व्यावसायिक निर्भरता- आवागमन तथा जनसंचार के द्रुतगामी साधनों ने ग्रामीण-नगरीय संलग्नता को बढ़ाया है। लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करने, नौकरियाँ करने, किसी व्यापार या व्यवसाय में स्वयं को लगाने, खेती के द्वारा उत्पन्न वस्तुओं को बेचने तथा अन्य आवश्यक सेवाएँ तथा वस्तुएँ प्राप्त करने हेतु कस्बों तथा नगरों पर निर्भर रहने लगे हैं। नगरीय लोग भी कारखानों में निर्मित माल के लिए बाजार हेतु गाँवों में सम्पर्क बढ़ाते हैं साथ ही श्रमिकों एवं अन्य सेवाओं हेतु मानव श्रम के लिए वे गाँवों पर निर्भर रहते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गाँव एवं नगर एक दूसरे के निकट आ रहे हैं, जिससे दोनों की विशेषताएँ एक-दूसरे के समाज में प्रविष्ट हो रही हैं। परिणामस्वरूप किसी भी नगर में ग्रामीण समाज की अनेक विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। शहरों में जनसंचार के माध्यमों का ध्यान प्रमुख रूप से केन्द्रित रहता है जिससे भारत का सार्वजनिक चेहरा, ग्रामीण की बजाय ज्यादा नगरीय होता जा रहा है। फिर भी देश में राजनीतिक शक्ति प्रदान करने का स्रोत आज भी ग्रामीण क्षेत्र में निहित हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- किसी देश की जनसंख्या का उसकी सामाजिक व्यवस्था से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।
- स्वतंत्र भारत में जनगणना अधिनियम, 1948 के आधार पर जनगणना की जाती है।
- भारत में सर्वप्रथम औपनिवेशिक (ब्रिटिश पराधीनता) काल में 1872 में जनगणना हुई थी। तब से लेकर 2011 तक कुल 8 जनगणना परतन्त्रता के काल में तथा 7 जनगणना स्वतंत्रता के काल में हो चुकी हैं।
- माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि के गुणोत्तर सिद्धान्त को स्पष्ट किया।
- जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धान्त के अनुसार जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास से जुड़ी हुई है।
- सात वर्ष और उससे अधिक आयु का व्यक्ति किसी भाषा को समझ सकता हो और उसे लिख तथा पढ़ सकता हो, उसे साक्षर माना जाता है।
- जनसंख्या में प्रति 1000 पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या लिंगानुपात कहलाती है।

- जनसंख्या में प्रति 1000 पर जीवित उत्पन्न हुए बच्चों की संख्या जन्म दर कहलाती है।
- जनसंख्या में प्रति 1000 पर हुई मौतों की संख्या मृत्यु दर कहलाती है।
- शिशु मृत्यु दर उन बच्चों की मृत्यु की संख्या दर्शाती है जो जीवित पैदा हुए 1000 बच्चों में से एक वर्ष की आयु प्राप्त होने से पूर्व ही मौत के मुँह में चले जाते हैं।
- मातृ मृत्यु दर उन स्त्रियों की संख्या की सूचक है जो जीवित प्रसूति के 1000 मामलों में अपने बच्चे को जन्म देते समय मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के 2015 के अनुमान के अनुसार भारत 2022 में विश्व का सर्वाधिक आबादी वाला देश बन जायेगा।
- किसी समाज का लिंगानुपात उस समाज की परिवार, विवाह तथा नातेदारी जैसी संस्थाओं की प्रकृति निर्धारित करता है।
- भारत की जनगणना के इतिहास में प्रथम बार 2001 में बाल लिंगानुपात (927), समग्र लिंगानुपात (933) से नीचे आ गया।
- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत के शहरों में 31.16 प्रतिशत आबादी निवास करती है।
- ग्रामीण की तुलना में शहरी भारत में बाल लिंगानुपात अधिक बिगड़ा हुआ है।
- जनसंख्या में वृद्धि की प्रकृति, लिंग आधारित चयनात्मक निषेध की प्रवृत्ति, जीवन की प्रत्याशा आदि में व्यापक क्षेत्रीय भिन्नताएँ निहित हैं।
- गाँवों की तुलना में शहरों में जातीय बन्धन शिथिल हैं।
- गाँवों की तुलना में नगरीय समाज में परिवर्तन की गति अपेक्षाकृत अधिक तेज है। प्रिण्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ-साथ सोशल मीडिया इस गति को बढ़ा रहा है।
- नगरीय समाज में श्रम विभाजन तथा श्रम विशेषीकरण पाया जाता है, जिसने प्रकार्यात्मक-अन्तर्निर्भरता को बढ़ाया है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक सम्बन्धों तथा नगरीय समाजों में द्वितीयक सम्बन्धों की बहुलता होती है।
- गाँवों में सहयोग ज्यादा जबकि शहरों में प्रतिस्पर्धा अधिक पाई जाती है।
- वर्तमान स्थितियों में गाँव एवं नगर दोनों एक-दूसरे के निकट आए हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न–

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. जनसंख्या के गुणोत्तर का सिद्धान्त निम्न में से किसने दिया है?
   (अ) माल्थस (ब) डार्विन
   (स) लामार्क (द) स्पेन्सर
2. जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में कौनसा स्थान है?
   (अ) प्रथम (ब) द्वितीय
   (स) तृतीय (द) चतुर्थ
3. संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट 2015 के अनुसार 2022 में भारत का जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में स्थान होगा–
   (अ) तृतीय (ब) द्वितीय
   (स) प्रथम (द) इनमें से कोई नहीं
4. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में कितनी जनगणनाएँ 2011 तक हो चुकी हैं?
   (अ) पाँच (ब) छः
   (स) चार (द) सात
5. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर है–
   (अ) 15.64 (ब) 17.64
   (स) 16.64 (द) 14.64
6. 2011 में भारत की कुल जनसंख्या में 15-59 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों का अनुपात है–
   (अ) 60% (ब) 63%
   (स) 64% (द) 70%
7. राजस्थान में जन घनत्व (2011) कितना है?
   (अ) 101 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. (ब) 201 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.
   (स) 301 व्यक्ति/किमी.^{2} (द) 401 व्यक्ति/किमी.^{2}
8. भारत में सबसे कम जन घनत्व किस राज्य में है?
   (अ) राजस्थान (ब) बिहार
   (स) पश्चिम बंगाल (द) अरुणाचल प्रदेश
9. भात के पास विश्व की कितनी प्रतिशत भूमि है?
   (अ) 2.4% (ब) 3.4%
   (स) 4.4% (द) 4.6%
10. भारत में विश्व की जनसंख्या का कितना प्रतिशत निवास करता है?
    (अ) 17% (ब) 18%
    (स) 19% (द) 20%
11. भारत की जनगणना 2011 के अनुसार भारत में स्त्री साक्षरता दर कितनी है?
    (अ) 65.16 (ब) 65.26
    (स) 65.36 (द) 65.46
12. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लिंगानुपात कितना है?
    (अ) 934 (ब) 927
    (स) 940 (द) 933
13. भारत की जनगणना 2011 के अनुसार ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत कितना है?

(अ) 68.84 (ब) 67.84
(स) 69.84 (द) 72.2

14. ग्राम पंचायत स्थानीय स्वशासन की इकाई है–
(अ) कस्बे की (ब) शहर की
(स) नगर की (द) गाँव की

15. श्रम विभाजन एवं श्रम विशेषीकरण की बहुतायत देखने को मिलती है–
(अ) गाँवों में (ब) नगरों में
(स) दोनों में (द) दोनों में से कोई नहीं

16. द्वितीयक सम्बन्ध निम्न में से कहाँ अधिक पाए जाते हैं?
(अ) नगरों में (ब) गाँवों में
(स) दोनों में (द) दोनों में से कोई नहीं

17. ''समाज का प्रत्येक व्यक्ति सिपाही होता है।'' यह कथन लागू होता है–
(अ) ग्रामीण समाज पर (ब) नगरीय समाज पर
(स) भारतीय समाज पर (द) सभी पर

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. भारतीय उपमहाद्वीप जनसंख्या के किस चरण से गुजर रहा है?
2. शिशु एवं मातृ-मृत्युदर का ऊँचा होना किसका सूचक है?
3. जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में प्रथम स्थान किसका है?
4. 2011 की जनगणनानुसार भारत में जनघनत्व कितना है?
5. आजादी के पश्चात् जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर किस दशक में रही?
6. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में भारत की जनसंख्या का कितना प्रतिशत लोग निवास करते हैं?
7. 2011 में भारत में मृत्यु दर कितनी रही?
8. शिक्षित होने की प्राथमिक एवं अपरिहार्य शर्त क्या है?
9. 2011 की जनगणना के अनुसार शहरी क्षेत्र में बाल लिंगानुपात कितना है?
10. नातेदारी के सम्बन्धों में सुदृढ़ता किस क्षेत्र में पाई जाती है?
11. जन्म के स्थान पर व्यक्तिगत योग्यता को महत्त्व किस क्षेत्र में मिलता है?
12. जजमानी प्रथा किस क्षेत्र की पहचान है?
13. परम्परागत भारतीय सामाजिक व्यवस्था में वस्तु विनिमय प्रचलित कहाँ रहा है?
14. नगरीय समाज की विशेषता सामूहिकता है अथवा व्यक्ति-वादिता?
15. विभिन्नता पर आधारित समाज कौनसा है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. माल्थस के गुणोत्तर वृद्धि के सिद्धान्त पर टिप्पणी कीजिए।
2. जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धान्त क्या है? स्पष्ट कीजिए।
3. भारत में मृत्युदर पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. वर्तमान भारत में साक्षरता की स्थिति स्पष्ट कीजिए।
5. बाल लिंगानुपात क्या है? वर्तमान स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए भावी तस्वीर बताइए।
6. भारतम ंव र्तमानस मयम ंग ामीणत थान गरीयज नसंख्याक ी विवेचना कीजिए।
7. भारत में गाँव तथा नगरीय समाज में विवाह, परिवार एवं नातेदारी के सन्दर्भ में विभिन्नता की व्याख्या कीजिए।
8. नगरीय सामाजिक संरचना में जाति की भूमिका की व्याख्या कीजिए।
9. ग्रामीण आर्थिक संरचना पर टिप्पणी कीजिए।
10. भारत में धर्म की स्थिति की व्याख्या कीजिए।
11. ग्रामीण तथा नगरीय समाज के सन्दर्भ में परिवर्तन, प्रतिमान तथा मूल्यों को स्पष्ट कीजिए।
12. गाँवों में मनोरंजन के साधनों की विवेचना कीजिए।
13. नगरीय लोगों की फैशन सम्बन्धित अभिरुचियों पर टिप्पणी कीजिए।
14. गाँवों तथा शहरों में पारस्परिक अन्तर्निर्भरता को स्पष्ट कीजिए।
15. भारत में जनसंख्या की आयु-संरचना तथा जीवन-प्रत्याशा पर टिप्पणी कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न–

1. जनांकिकी से सम्बन्धित अवधारणाओं को समझाइए।
2. भारत में जनसंख्या की रचना पर निबन्ध लिखिए।
3. ग्रामीण-नगरीय विभाजन को स्पष्ट कीजिए।
4. समकालीन भारत में ग्रामीण-नगरीय संलग्नता की व्याख्या कीजिए।

उत्तरमाला

1. (अ)	2. (ब)	3. (स)	4. (द)	5. (स)
6. (ब)	7. (ब)	8. (द)	9. (अ)	10. (ब)
11. (द)	12. (स)	13. (अ)	14. (द)	15. (ब)
16. (अ)	17. (अ)			